RNI No - RAJHIN/2003/9899 : Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2015-2017
Published on 30 August 2017 : Posted at RMS, Sri Ganganagar on Ist or 2nd of September 2017

मासिक पत्रिका

# अजायब ❁ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : पांचवाँ | सितम्बर–2017

6

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

**पवित्र हृदय की कल्पना**

7

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

**मालिक का भाणा**

17

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

**सवाल जवाब**

21

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

**हे सतगुरु ! मुझे सदा अपने साथ रखें**

**संपादक**-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 , 98 71 50 19 99

**विशेष सलाहकार**-गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04 , 99 28 92 53 04

**उप संपादक**-नन्दनी

**सहयोग**-ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/-

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 186 Website : www.ajaibbani.org

# बाबा जी का शुभ जन्मदिवस 11 सितम्बर-2017

आ सजणा चल, शगन मनाईऐ, (2)
रलके मनाईऐ सारे, हसिऐ ते गाईऐ, आ सजणा .....

1. जन्म दिहाड़ा, अजायब सोहणे सजण दा,
भागां नाल आया दिन, साडे हसण दा, (2)
खुशियां च सारे कैहंदे, जश्न मनाईऐ, आ सजणा .....

2. जन्म दिहाड़ा तेरे, नाल सोहणा लगदा,
देखो नीं सईयो मेरा, सोहणा गुरु फब्बदा , (2)
सारे रल मिल अज, खुशियां मनाईऐ, आ सजणा .....

3. सामने तूं बैठा प्यारे, बहुत सोहणा लगदा,
तेरे बगैर जीणा, चंगा नहियों लगदा, (2)
सारे असीं चाहिए दिन, ऐदां ही मनाईऐ, आ सजणा .....

4. गुरु कृपाल बड़ा, खुश अज लगदा,
माता-पिता नूं दिन, शोभा दिंदा लगदा, (2)
वंडदा रहे दया कोई, बाकी न बचाईऐ, आ सजणा .....

5. अजायब 'गुरमेल' ऐस, लायक ता नी लगदा,
जीव निमाणा वस, ओहदे वी नी लगदा, (2)
मन सजणा ओहदी, जिंदगी बणाईऐ, आ सजणा .....

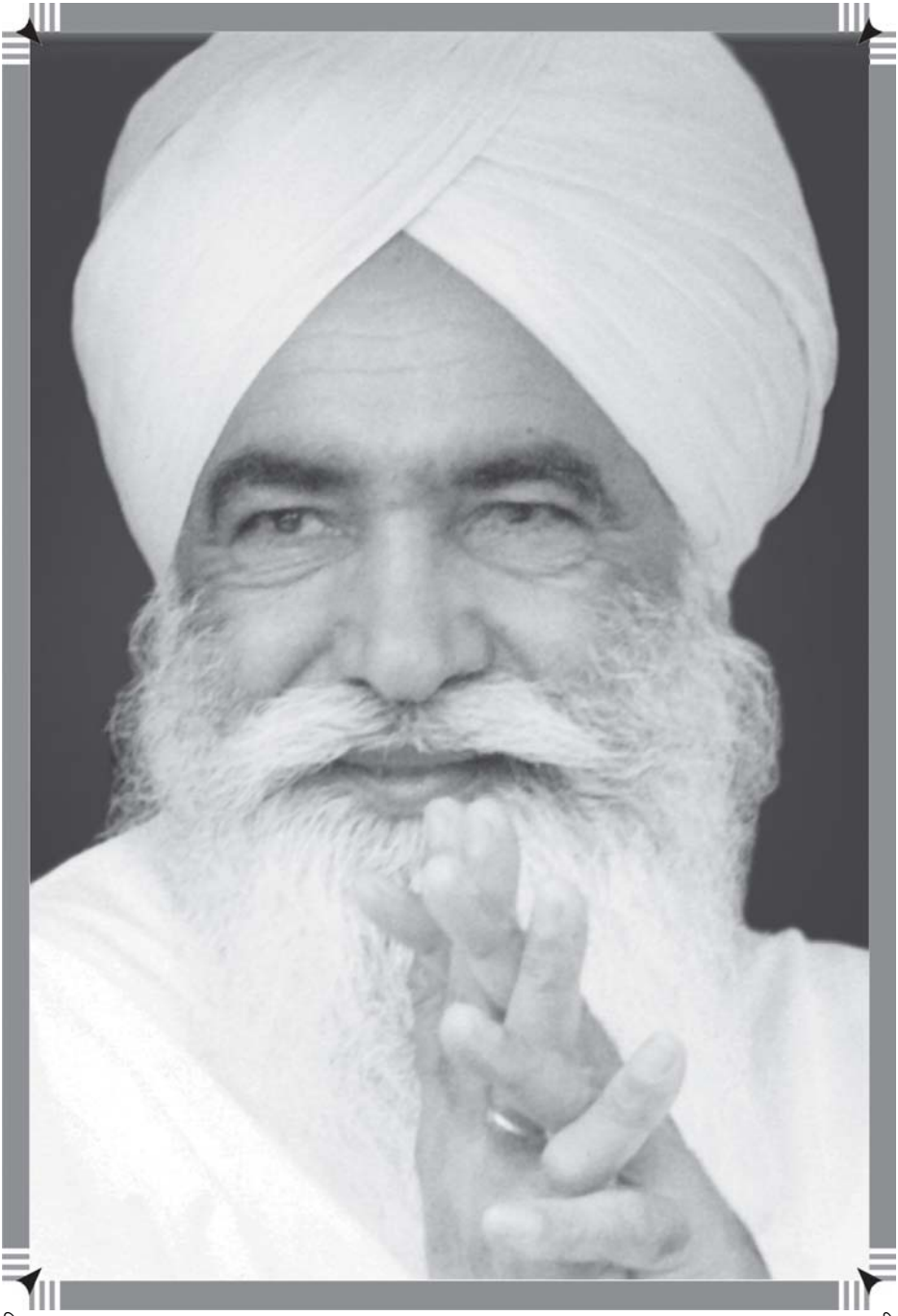

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

# पवित्र हृदय की कल्पना

12 जनवरी 1997 मुम्बई

परम पिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया अपनी भक्ति का दान दिया और हमें भक्ति करने का मौका दिया है।

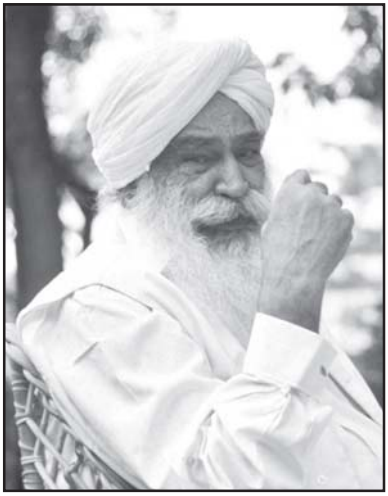

महाराज कृपाल सदा ही कहा करते थे कि अभ्यास में बैठने से पहले आप कोई तड़प भरा शब्द बोलें। शब्द **पवित्र हृदय की कल्पना** होती है। शब्दों में तड़प होती है, शब्द मालिक के प्यारों की लेखनियाँ होते हैं।

हम ऐसा प्यार और तड़प लेकर अभ्यास में बैठें ताकि करण–कारण परमात्मा हमारी आत्मा की पुकार सुनकर हम पर रहम करे। गुरु अर्जुनदेव जी कहते है:

*हर हर नाम जपेन्दया, कछु न कहे यम काल।*
*नानक मन तन सुखी होय, अन्ते मिले गोपाल॥*

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जो सुबह उठकर परमात्मा की भक्ति में लगता है, परमात्मा के साथ जुड़ता है उसके ऊँचे भाग्य हैं।''

*नानक भाग भले तिस जन के, जो हर चरणी चित्त लावे।*

हाँ भाई! आँखें बंद करके अपना अभ्यास शुरू करें।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# मालिक का भाणा

(गुरु नानक देव जी की बानी)

इससे पहले मैं गुरुग्रंथ साहब की बानी **राग गऊड़ी** और **सुखमनी साहब** पर सतसंग कर चुका हूँ। सन्त–सतगुरुओं ने हम जीवों के भले के लिए जो लिखा है उसे सन्तमत के उसूलों के मुताबिक ही बयान किया गया है, जिससे प्रेमी फायदा उठा रहे हैं। सन्तों की बानी की एक–एक तुक इज्जत के काबिल होती है।

मैंने रसल परकिन्स से वायदा किया था कि मैं गुरुग्रंथ साहब की बानी **आसा जी दी वार** पर भी सतसंग करूंगा। आप जानते हैं पिछले कुछ महीने मेरी सेहत ठीक नहीं थी इसलिए मैं यह सेवा नहीं कर सका। आज मुझे खुशी है कि मैं अपना वायदा पूरा करने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं यह उद्यम अपने गुरुदेव की दया से कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे गुरुदेव दया करेंगे, हिम्मत बख्शेंगे और अपने कार्य को खुद ही कर लेंगे।

हमें परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए जिसने हमें यह अमोलक रोगहीन देह और बहुत से सुखों के साधन बख्शें हैं। परमात्मा ने हमें इस संसार में भेजकर कहा, ''मैं आपको अपने से बिछोड़ रहा हूँ, मिलने का मौका भी दूँगा अगर आप हिम्मत करके मुझसे मिल सकें तो मैं आपको ईनाम के रूप में आपका वही घर फिर वापिस दूंगा।'' सन्त–महात्मा हमें परमात्मा से मिलने का साधन और तरीका बताते हैं। वे हमें हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं सिखाते अगर कोई बिमारी है तो उसका उपाय भी है।

आप जानते हैं कि सरकार ने यहाँ के प्रबंध के लिए कुछ कानून बनाए हैं और उन कानूनों को छपवा भी दिया है। जिनमें लिखा है कि चोर को, कत्ल करने वाले को इस दफा के मुताबिक यह सजा मिलेगी। कोई भी उन कानूनों

की जानकारी ले सकता है अगर कोई चोरी या कत्ल करने के बाद अदालत में जाकर यह कहे कि मेरे साथ बेइंसाफी हुई है, मैं नहीं जानता था कि कानून ऐसे हैं। वे कहते हैं, ''कानूनों को समझना तेरा फर्ज था।''

जब निचली अदालत सजा दे देती है तो वह ऊपर की अदालत में जाकर रहम की अपील करता है। कई बार रहम की अपील मंजूर हो जाती है, वह छूट जाता है लेकिन हर एक के नसीब में ऐसा नहीं कि रहम की अपील मंजूर हो जाए।

इसी तरह परमात्मा ने ज्ञान करवाने के लिए अपने प्यारे सन्त–महात्मा इस संसार में भेजे। सन्त–महात्माओं ने आत्मा पर लागू होने वाले कानूनों को छिपाकर नहीं रखा। उन्होंने अपनी लेखनियों में खोलकर समझाया है कि हर व्यक्ति का हिसाब–किताब रखने के लिए एक खास देवता धर्मराज मुकर्रर किया गया है। धर्मराज आपके किए हुए कर्मों को अच्छी तरह जानता है।

अगर कोई यह कहे कि मुझे इस बात की जानकारी नहीं थी तो धर्मराज उससे पूछता है, ''क्या तूने कभी किसी महात्मा की बानी नहीं पढ़ी थी कि किस कर्म की क्या सजा मिलती है?'' इसी तरह सन्त–महात्माओं के ग्रंथ भी कानून हैं, जिन पर चलकर हम परमात्मा से मिल सकते हैं और वापिस अपने घर पहुँच सकते हैं।

राजा सारंग की दो रानियां थी। पहली रानी से अस का जन्म हुआ। अस सन्तों की सेवा करने वाला इंसान था। दूसरी रानी से शार्दूल और खान सुल्तान पैदा हुए। अस बहुत सुंदर था। उसकी सौतेली माता ने उसके रूप पर मोहित होकर अपने मन की नीच भावना उसके आगे जाहिर की लेकिन अस व्याभिचार के लिए नहीं माना।

रानी ने बदले की भावना रखकर राजा को बहका दिया कि तेरे लाडले अस ने मेरा सत भंग किया है। राजा हुकूमत के नशे और औरत के प्यार में

बंधा हुआ था। राजा ने कोई जांच पड़ताल नहीं की, फौरन वजीर को बुलाकर हुक्म दे दिया, ''अस को बाहर ले जाकर जल्लादों से कत्ल करवा दो और इसका कोई एक अंग काटकर ले आओ जिससे मुझे तसल्ली हो जाए कि अस का कत्ल कर दिया गया है।''

वजीर अस को जंगल में ले गया। वजीर ने सोचा अस सन्तों की सेवा करता है इसका कत्ल करना ठीक नहीं। उन्होंने अस का एक हाथ काटकर उसे कुएं में फैंक दिया, उसका कटा हुआ हाथ राजा के आगे रखकर कहा, ''हमने अस का कत्ल करके उसे कुएं में फैंक दिया है।''

बंजारे जो चलते–फिरते व्यापार करते हैं उन्होंने पानी के लिए कुएं में बाल्टी डाली। अस ने अपने कटे हुए हाथ को बाल्टी में फँसा दिया। बंजारों ने देखा कि कोई आदमी कुएं में गिरा हुआ है। उन्हें दया आई उन्होंने अस को कुएं से बाहर निकाल लिया। बंजारों ने अस को एक धोबी के पास बेच दिया। अस हर रोज बैल पर कपड़े लादकर धोबीघाट ले जाता, वहाँ से वापिस धोबी के घर ले आता और परमात्मा का भजन भी करता रहता।

अस जिस नगर में रह रहा था वहाँ का राजा गुजर गया। उस राजा की कोई औलाद नहीं थी जिसे गद्दी का वारिस बनाया जाता। मंत्रीमंडल ने एक गुप्त फैसला किया कि जो आदमी सुबह सबसे पहले नगर का दरवाजा खोलेगा उसे राजगद्दी पर बिठा दिया जाएगा। अस हर रोज सुबह बैल पर कपड़े लादकर धोबीघाट ले जाया करता था, जब उसने नगर का दरवाजा बंद देखा तो उसने दरवाजा खोल दिया। संतरी अस को मंत्रीमंडल के पास ले गए कि इसने सबसे पहले नगर का दरवाजा खोला है। मंत्रीमंडल के फैसले के मुताबिक अस को वहाँ का राजा बना दिया गया। अस राजा का बेटा था, धर्मात्मा आदमी था। उसने प्रजा का बहुत ख्याल रखा अच्छा राज्य किया। अस ने प्रजा के फायदे के लिए बहुत अन्न–भंडार इकट्ठा कर लिया।

राजा सारंग के राज्य में बहुत भयानक अकाल पड़ा। राजा सारंग और उसके लड़के ऐश–परस्त थे। ऐश–परस्तों को प्रजा की चिन्ता नहीं होती। राजा सारंग ने अपने वजीरों से कहा, ''कहीं से भी अन्न ले आओ।'' वजीर खोज करते–करते अस के राज्य में पहुँचे। अस अब असराज बन चुका था, लोग उसे टुन्डा राजा भी कहते थे। अस ने वजीर को पहचान लिया उसका आदर किया और उसे पैसों के बिना बहुत अन्न दे दिया।

वजीर ने आकर राजा सारंग को सारी कहानी बताई कि आपका बेटा असराज उस राज्य का मालिक है। वह बहुत अच्छा धर्मात्मा इंसान है, उसने पैसे लिए बिना हमें बहुत सा अन्न दिया है। जब राजा सारंग ने अपने बेटे की यह गाथा सुनी तो उसने असराज को न्यौता दिया कि वह उससे आकर जरूर मिले, वह उसे अपना राज्य देना चाहता है। असराज फौजें लेकर शान–शौकत से अपने पिता से मिलने के लिए गया। यह जानकर उसके सौतेले भाई शार्दूल और खान सुल्तान के दिल में आग भड़की और उन्होंने असराज के साथ जंग की। वहाँ भी टुन्डे असराज की जीत हुई। असराज ने वहाँ भी धर्मी–राज्य किया।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने धर्मी असराज की कहानी को बहुत प्यार से गुरुग्रंथ साहब में अंकित किया है। इस कहानी का भाव है कि हमें हमेशा पवित्र जीवन बिताना चाहिए, सुख–दुःख में परमात्मा को ध्याना चाहिए। पवित्र जीवन और गुरु पर भरोसा रखने वाले इंसान की सदा ही जय होती है। परमात्मा ने सतगुरु को इतनी शक्तियां दी हैं जो बयान नहीं की जा सकती।

गुरु नानकदेव जी जीवों को सतनाम का उपदेश देते हुए रावी नदी के किनारे आकर बैठ गए, बाद में वहाँ करतारपुर बेदियां गांव बसा। वहाँ का एक दुकानदार सुबह तीन बजे नदी पार करके गुरु नानकदेव जी के दर्शन

करने आता था। वह गुरु नानकदेव जी के पवित्र दर्शन करके अपनी आत्मा की मैल दूर करता और नदी में स्नान करके अभ्यास में बैठ जाता।

एक बार ऐसी मौज हुई कि उस दुकानदार ने जब नदी में डुबकी लगाई तो वह मगरमच्छ के मुँह में चला गया। एक मछेरे ने अपनी किस्मत आजमाने के लिए नदी में जाल फैंका। उसके जाल में छोटी–छोटी मछलियों के साथ एक मगरमच्छ भी फँस गया। मछेरा बहुत खुश हुआ कि मेरी सोई हुई किस्मत जागी है, आज मुझे बहुत पैसे मिलेंगे।

घर पहुँचकर मछेरे ने मगरमच्छ का पेट काटा तो मगरमच्छ के पेट से एक बेहोश आदमी निकला जिसके शरीर पर खरोंच का एक भी निशान नहीं था। मछेरे ने उस आदमी को स्नान करवाया तो उसे होश आ गया लेकिन वह अपना पिछला जन्म भूल चुका था। मछेरे का कोई लड़का नहीं था, वह उसे पाकर बहुत खुश हुआ कि परमात्मा ने मुझ पर बहुत भारी दया की है मुझे बिना किसी मेहनत मुश्क्कत के नौजवान बेटा मिल गया है।

मछेरे के पास बहुत धन था। मछेरे ने उस नौजवान की शादी एक अच्छे घराने में कर दी। उसके घर दो लड़के और दो लड़कियां पैदा हुई। पहली शादी से भी उस नौजवान के दो लड़के और दो लड़कियां थी। उस नौजवान की पहली बीवी और बच्चों ने उसकी बहुत खोज की। जब वह नौजवान न मिला तो थाने में रिर्पोट भी करवाई लेकिन कोई नतीजा न निकलने पर वे **मालिक का भाणां** समझकर चुप हो गए।

एक बार वहाँ मेला लगा। वह नौजवान अपनी बीवी और बच्चों के साथ उस मेले में गया। वहाँ उसकी पहली बीवी ने अपने पति को पहचान लिया और उस नौजवान की बाजू पकड़कर बोली, ''प्यारे पति जी! आप इतने दिन कहाँ रहे?'' नई पत्नी पहले वाली पत्नी पर शेर की तरह झपटी और कहने

लगी, ''मेरे पति पर कब्जा करने वाली तू कौन सी सौतन है?'' लेकिन वे दोनों ही अपनी–अपनी जगह सच्ची थी।

उन्होंने नगर के अफसर के पास जाकर मुकदमा दर्ज किया लेकिन वहाँ भी फैसला नहीं हो सका। अदालत में गए कोई भी अफसर इस गाँठ को नहीं खोल सका। आखिर किसी ने सलाह दी कि आप लोग गुरु नानकदेव जी के पास जाएं। गुरु नानकदेव जी रावी नदी के किनारे बैठे हैं, वे ही इसका हल निकाल सकते हैं।

दोनों औरतों ने गुरु नानकदेव जी के पास जाकर अपने दुःखी दिल की हालत सुनाई। गुरु नानकदेव जी ने मुस्कुराकर कहा, ''बेटी! तुम दोनों अपनी–अपनी जगह पर सही हो। हम परमात्मा से इजाजत लेते हैं अगर परमात्मा की आज्ञा हुई तो तुम्हारा फैसला हो जाएगा।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''तुममे से एक अपने पति के दाँई तरफ और दूसरी अपने पति की बाँई तरफ खड़ी होकर उसका हाथ पकड़ लो। परमात्मा अकाल पुरुष पर भरोसा रखकर अपने पति को अपनी–अपनी तरफ खींचों।''

जब दोनों औरतों ने उस नौजवान को अपनी–अपनी तरफ खींचा तो एक के दो आदमी बन गए। दोनों औरतें खुश होकर चली गई। जो फैसला दुनिया की कोई अदालत नहीं कर सकी सन्तों ने अपनी दया–दृष्टि से उसका फैसला कर दिया। सन्तमत का इतिहास ऐसे वाक्यों से भरा पड़ा है। परमात्मा सन्तों के अंदर अपनी शक्ति रखकर काम करता है। परमात्मा पुरुष को नारी और नारी को पुरुष कर सकता है। परमात्मा जल की जगह थल और थल की जगह जल कर सकता है, परमात्मा बड़ा बेपरवाह है।

मारने वाले से रक्षा करने वाला बड़ा है। जब इब्राहिम को आग पर चलाया गया तो अंगारे फूल बन गए। जब भक्त प्रह्लाद को उसकी जादूगरनी बुआ आग में लेकर बैठ गई तब भी उस करण–कारण परमात्मा गुरुदेव ने

उसकी रक्षा की। परमात्मा रक्षा करते समय देर नहीं लगाता लेकिन सवाल अपनी श्रद्धा, प्यार और भरोसे का है। कबीर साहब कहते हैं:

*जाँको राखे साईयाँ मार सके ना कोए।*
*बाल न बाँका कर सके, जे जग बैरी होए।।*

आसा जी दी वार में ज्यादातर बानी गुरु नानकदेव जी की है और कुछ बानी गुरु अंगददेव जी की भी है। सभी सन्तों ने अपनी लेखनियों में तीन मुख्य बातें लिखी हैं। गुरु के बिना नाम नहीं मिलता, नाम के बिना मुक्ति नहीं और सतसंग के बिना हम अपनी गलतियाँ नहीं निकाल सकते।

**बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार।।**
**जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार।।**

सूफी सन्त शेख फरीद अच्छी कमाई वाले सन्त हुए हैं। उनकी बानी भी गुरुग्रंथ साहब में दर्ज है। उनके पौत्र का नाम शेख बरम था जो बाद में उनकी गद्दी का वारिस बना। शेख बरम ने गुरु नानकदेव जी से बहुत से प्रश्न किए। उनके उत्तर में गुरु नानकदेव जी बताते हैं कि गुरु किस ताकत को कहते हैं। गुरु जीवों के लिए क्या करता है? जिसने मिश्री खाई हो वही मिश्री का स्वाद बता सकता है। जिसने गुरु से कुछ प्राप्त किया हो वही गुरु के मुत्तलिक बता सकता है।

गुरु नानकदेव जी शेख बरम से कहते हैं, ''मैं सांस–सांस के साथ अपने गुरु पर बलिहार जाता हूँ। गुरु ने मेरी राक्षस बुद्धि को देवता बुद्धि बना दिया। मैं भूला हुआ था गुरु ने मुझे परमात्मा के साथ जोड़ दिया, मेरी जिंदगी पलट कर रख दी।''

**जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार।।**
**एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार।।**

आप कहते हैं, ''देख भई शेख बरम! इस संसार मंडल में एक सूरज और एक चन्द्रमा है जो सब जगह रोशनी करते हैं। सच्चाई यह है कि चाहे लाखों सूरज और चंद्रमा चढ़ जाएँ! लेकिन अंदर के अज्ञान का अंधेरा गुरु के बिना दूर हो ही नहीं सकता।'' बेशक परमात्मा हमारे अंदर है लेकिन हम उससे नहीं मिल सकते। यह काम वही महात्मा कर सकता है जो परमात्मा की तरफ से इस संसार में आया है, परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ है।

**नानक गुरु न चेतनी मनि आपणै सुचेत।।**
**छुटे तिल बुआड़ जिउ सुंणे अंदरि खेत।।**
**खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह।।**
**फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह।।**

आप कहते हैं कि जो लोग पूरे गुरु से नाम प्राप्त नहीं करते, सोचते हैं कि गुरु की क्या जरूरत है? वे बुवाड़ तिल के उस बूटे की तरह हैं, जिसमें फूल तो लगते हैं लेकिन अंदर बीज नहीं होता। जमींदार बुवाड़ तिल के बूटे को खेत में ही छोड़ आते हैं कि इसे घर ले जाने का कोई फायदा नहीं, इसे जानवर तक भी नहीं खाते।

इसी तरह मनमुखों के बेटे–बेटियाँ भी होते हैं। वे तंदरूस्ती का मजा भी मनाते हैं लेकिन परमात्मा की दरगाह में उनकी कद्र बुवाड़ तिल के उस बूटे की तरह ही है। इस जिंदगी के बाद परमात्मा उन मनमुखों को अपने घर में दाखिल नहीं होने देता।

**आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ।।**
**दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।।**

आप कहते हैं, ''इस संसार की रचना परमात्मा ने की है। परमात्मा ने ही पशु, पक्षी और इंसान की सब योनियाँ बनाई हैं। वह परमात्मा इस संसार

को पैदा करके खुद ही देख रहा है कि यह संसार किस तरह चल रहा है और कौन क्या कर रहा है?''

**दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ।।**
**तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ।।**

आप कहते हैं, ''परमात्मा तू खुद ही देह बनाकर जीवों को सजाता है। तू ही उस देह में जीवन डालता है। उस ताकत के जरिए ही जीव दौड़े फिरते हैं, सब कुछ तू खुद ही कर रहा है।''

**करि आसणु डिठो चाउ।। करि आसणु डिठो चाउ।।**

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''जिस शक्ति ने इस संसार को पैदा किया है वह अकाल है, वह काल के दायरे में नहीं आता। इस संसार की रचना रचकर इसका इंतजाम भी परमात्मा खुद ही कर रहा है। जो जैसा कर्म करता है वह उसे वैसा ही फल देता है। हमें यह समझ गुरुओं की कृपा से ही आ सकती है।''

यह फैसला भी परमात्मा का होता है कि किसे गुरु से मिलवाना है, किसे नाम देना है, किससे इस जन्म में नाम की कमाई करवानी है। जब हम नाम की कमाई करके अंदर जाते हैं तब हमें पता लगता है कि परमात्मा की ताकत हर जगह काम कर रही है; वह परमात्मा कण–कण में व्यापक है।

***

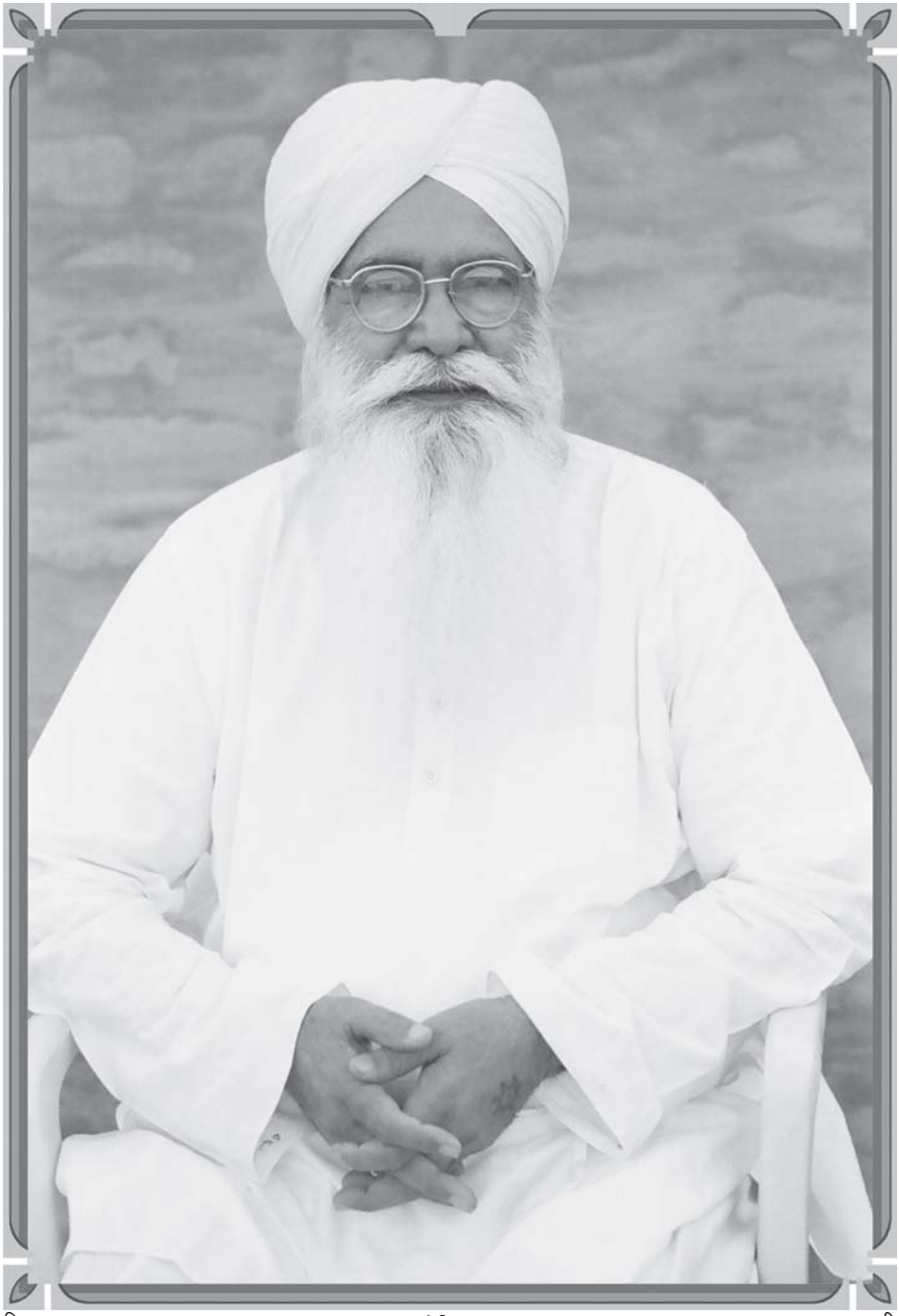

# सवाल–जवाब

***एक प्रेमीः-*** *कुछ माता-पिता ने यह सवाल पूछा है कि वे अपने बच्चों को सन्तमत की शिक्षा के अनुसार किस तरह पाल-पोस सकते हैं? धार्मिक मान्यताओं के साथ उनका बर्ताव कैसा होना चाहिए? समस्या यह है कि कई बच्चे जिन्हें नामदान प्राप्त है वे जब अपने घर में होते हैं तो उनके ऊपर सन्तमत का काफी असर होता है। जब वे स्कूल में जाते हैं तो उन्हे देश के धर्म के अनुसार शिक्षाएं मिलती हैं जिससे उन्हें परेशानी होती है बाद में उसका नतीजा यह निकलता है कि वे बच्चे सन्तमत छोड़कर चले जाते हैं इसका क्या ईलाज है?*

***बाबा जीः-*** यह बड़ी उलझी हुई बात है। हर माता-पिता के लिए यह समस्या बनी हुई है क्योंकि बच्चे की जिंदगी बनाने वाले माता-पिता ही होते हैं। जिस मकान की नींव मजबूत है वह मकान जल्दी नहीं गिरता इसी तरह अगर माता-पिता बच्चे के अंदर सन्तमत के उसूल भर दें तो जब वह स्कूल जाएगा तब बच्चे को काफी मदद मिलेगी। माता-पिता बच्चे को स्कूल में दाखिल करवाकर बच्चे की तरफ से बेफिक्र न हों, बच्चे की देखभाल करते रहें।

सबसे अच्छा सुझाव तो यह है कि जहाँ सतसंगियों का ग्रुप है या कोई आश्रम है वहाँ सतसंगी मिलजुल कर स्कूल चालू कर लें। इससे सतसंगियों के बच्चों की जिंदगी काफी अच्छी बन सकती है, बच्चों को अच्छी तालीम मिल सकती है। सतसंगी अध्यापक बाहर के स्कूलों में भी बच्चों को पढ़ाने के लिए जाते हैं अगर उन अध्यापकों

को वही तनख्वाह आश्रम से दी जाए और सतसंगी अध्यापक ही बच्चों को शिक्षा दें तो बच्चों के लिए बहुत फायदेमंद होगा, सतसंगियों के बच्चों का भविष्य उज्जवल होगा।

कनाडा में भी प्रेमियों ने कृपाल आश्रम में स्कूल शुरू किया है, वहाँ सतसंगियों के बच्चे फायदा उठाते हैं। अमेरिका में भी कई जगह स्कूल शुरू किए गए हैं। आपको सन्तबानी आश्रम का तो पता ही है कि वह स्कूल अच्छी तरक्की कर रहा है। इसी तरह कोलम्बिया की संगत को भी प्रेम-प्यार से इस तरफ तवज्जो देनी चाहिए, स्कूल का इंतजाम करना चाहिए ताकि सतसंगियों के बच्चे फायदा उठा सकें।

मैं जब पिछले टूर पर कनाडा गया था वहाँ स्कूल की अनुमति दे आया था। कृपाल आश्रम में प्रेमियों ने स्कूल शुरू किया है वहाँ सतसंगियों के बच्चे फायदा उठा रहे हैं। मेरा ख्याल है डॉक्टर मोलिनो को खुद इस तरफ तवज्जो देनी चाहिए। प्रेमियों को प्रेरित करना चाहिए ताकि बच्चों को ये मुसीबत न झेलनी पड़े क्योंकि बच्चे बड़े होकर जब यूनिवर्सिटियों में जाएंगे तब उनकी जिंदगी मजबूत बनी होगी फिर इतना खतरा नहीं होगा जितना छोटे बच्चों को होता है।

मैं आशा करता हूँ कि यहाँ से जाकर जब आप बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की मीटिंग करें तब उस मीटिंग में इस प्रस्ताव को भी रखें और इस पर खुले दिल से विचार करें। सब मिलकर इसे कामयाब बनाने की कोशिश करें।

***एक प्रेमी:-*** *जब हम अभ्यास करते हैं तो हमारा ध्यान आँखों के बीच में केन्द्रित होना चाहिए, ऐसा करने का उत्तम तरीका क्या है?*

***बाबा जीः-*** मैं जब आपको अभ्यास में बिठाता हूँ तो यही बताता हूँ कि अभ्यास में शान्त मन से बैठें। शान्त का मतलब है कि उस समय आपके अंदर दुनिया के सकंल्प-विकल्प नहीं उठने चाहिए। आप जब भी अभ्यास में बैठें और चलते-फिरते भी आपका ख्याल तीसरे तिल पर होना चाहिए। तीसरे तिल से हमारा बहुत गहरा ताल्लुक है, यहाँ हमारी आत्मा की सीट है।

***एक प्रेमीः-*** *कल आपने यह कहा था कि जो सन्त ऊपर के मंडलों में जाते हैं वही भगवान को देख सकते हैं लेकिन हम तो ऊपर के मंडलों में नहीं गए फिर भी हम भगवान को देख रहे हैं।*

***बाबा जीः-*** मुझे बहुत खुशी है, मैंने कल भी यही कहा था कि सन्त और परमात्मा में कोई फर्क नहीं होता। कबीर साहब कहते हैंः

***हमरो भर्ता बड़ो विवेकी आपे सन्त कहावे।***

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

***साध रूप अपना तन धारया।***

***एक प्रेमीः-*** *अगर हमारे पास कोई ऐसा बच्चा आए जिसकी माँ नामलेवा है लेकिन बाप नामलेवा नहीं? हम ऐसे बच्चों की नींव किस तरह मजबूत बना सकते हैं। जब हमें खुद ही सन्तमत का पता नहीं तो हम दूसरों को क्या समझा सकते हैं?*

***बाबा जीः-*** मैंने आपको पहले भी बताया था कि सवाल सोच समझकर करें। सतसंगी को तो सन्तमत की पूरी जानकारी दी जाती है, उसे सन्तमत का पूरा ज्ञान होता है। जब सतसंगी को सन्तमत की पूरी जानकारी है तो वह क्यों नहीं समझाएगा।

***

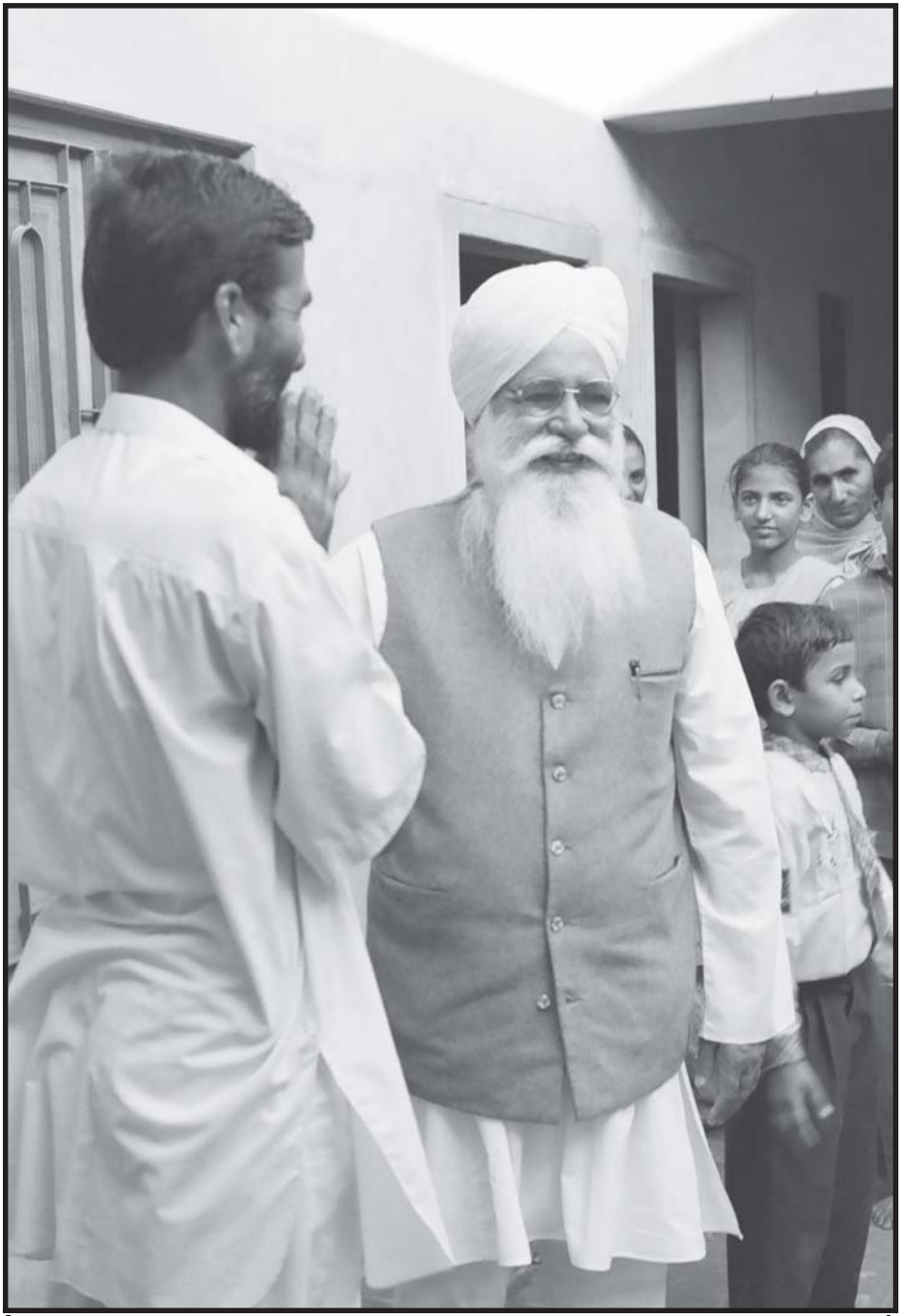

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# हे सतगुरु! मुझे सदा अपने साथ रखें

कबीर साहब की बानी DVD-570 सिली–टिलार्ड, फ्राँस

परमात्मा गुरुदेव सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया। जब शिष्य सिमरन करके नौं द्वारों को खाली करके आँखों के बीच दसवें द्वार तक पहुँचता है और गुरु के नूरी स्वरूप को अंदर प्रकट कर लेता है तब उसे अंदर के मंडलों में अपने गुरु की महानता का पता चलता है कि असलियत में उसका गुरु क्या है?

यह समझने के बाद ही शिष्य को पता चलता है कि उसका गुरु अंतर्यामी है, घट-घट की जानने वाला है। तब वह अपने गुरु के आगे विनती करता है, ''हे गुरुदेव! मैं बुरे कर्म करता हूँ आप सब जानते हैं। मैं दुनियावी लोगों से अपने बुरे कर्मों को छिपाता हूँ लेकिन मेरा कोई बुरा कर्म आपसे छिपा हुआ नहीं है।''

तब शिष्य के दिल से सच्ची विनती निकलती है, ''**हे सतगुरु! मुझे सदा अपने साथ रखें।** लेखा लेने से पहले मुझे माफ कर दें। मैंने मन के कहने पर बहुत बुरे कर्म किए हैं, मैं विषय-विकारों के जंगल में इधर-उधर भटकता रहा लेकिन आप माफ करने वाले हैं। आप मेरा गुनाहों वाला कागज जिसमें मेरे बुरे कर्मों का लेखा-जोखा है उसे न देखें।

जब परमात्मा कृपाल ने इस गरीब आत्मा पर अपनी रहमत की बारिश की तब इस गरीब आत्मा के हृदय से यही आवाज निकली, ''मैं तिल-तिल का अपराधी हूँ, रत्ती-रत्ती का चोर हूँ। मैंने कदम-कदम पर गलतियां की हैं। अब यही बेहतर होगा कि आप लेखा लेने से पहले मुझे माफ कर दें। आप मेरे गुनाहों वाले कागज को न देखें जिसमें मेरे बुरे कर्मों का लेखा लिखा हुआ है।''

महाराज सावन सिंह जी सदा ही कहते रहे, ''शिष्य गुरु से तब तक ही सवाल करता है जब तक शिष्य अंदर नहीं जाता और गुरु की महानता को नहीं समझता। जब शिष्य को पता लग जाता है कि मेरा गुरु अंतर्यामी है, तब शिष्य के सभी सवाल खत्म हो जाते हैं फिर जब वह गुरु के पास जाता है तब उसके मुँह में जुबान नहीं रहती। तब उसे समझ आ जाती है कि मेरा गुरु सब कुछ जानता है।''

परमपिता कृपाल की दया से ग्रुप में बहुत से प्रेमी जब हिन्दुस्तान आते हैं तो वे कहते हैं कि जब हम अपने देश से चले थे तब हमारे मन में बहुत से सवाल थे लेकिन यहाँ आकर हमारा कोई सवाल नहीं रहा। आप हमें कुछ समय के लिए अपने दर्शन कर लेने दें।

जब मैं बाहर जाता हूँ तब बहुत से लोग मुझसे मिलने आते हैं। ऐसा नहीं कि सभी के पास सवाल हों। ज्यादातर प्रेमी मुझे चुपचाप देखना चाहते हैं। जब हम भूले जीवों को समझ आ जाता है कि गुरु के चुप रहने का क्या राज़ है? तब हम गुरु के भोले-भाले मासूम चेहरे को ही देखना चाहते हैं।

जब सच्चा शिष्य अभ्यास के जरिए अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे उतार लेता है तब वह दुनिया की इच्छाओं से ऊपर उठ जाता है फिर उसे दुनिया का कुछ भी नहीं चाहिए। तब वह सिर्फ गुरु की सुंदर और मनमोहनी मूरत के लिए ही तरसता है, उसे सदा गुरु के सुंदर मुखड़े के दर्शनों की चाह रहती है। शिष्य की हालत उस मछली की तरह हो जाती है जो पानी से प्यार करती है। मछली को पानी से बाहर निकालते ही वह तड़पकर मर जाती है। शिष्य सदा गुरु को देखकर ही जीता है, जब वह गुरु की मन मोहनी मूरत नहीं देख पाता तो उसे लगता है जैसे वह मर गया है। शिष्य एक पल के लिए भी गुरु के दर्शनों से दूर नहीं होना चाहता।

प्यारे यो! जब सन्त-सतगुरु अपने सेवक को 'शब्द-नाम' का भेद देते हैं तब अपना नूरी शब्द स्वरूप सेवक के अंदर रख देते हैं

जो शान्त स्वरूप होता है। गुरु अभूल होता है, गुरु का स्वरूप सदा ही अंदर सेवक की अगुवाई करता है। सेवक जब उस स्वरूप को अपने अंदर प्रकट कर लेता है तब विषय-विकारों की आग में जलने वाला मन शान्त होकर ठंडी बर्फ की तरह हो जाता है।

परमात्मा सावन कई बार अपने सतसंग में अमीर खुसरो की कहानी सुनाया करते थे कि अमीर खुसरो मुल्तान सूबे के हाकिम का नौकर था। किसी बात से उसकी सूबे के हाकिम से अनबन हो गई, वह अपनी रिटायरमेंट के हिसाब-किताब का पैसा (उस समय चांदी की करंसी होती थी) ऊँटों पर लादकर दिल्ली की तरफ चल पड़ा। दिल्ली में उसका प्यारा मुर्शिद निजामुद्दीन औलिया रह रहा था।

निजामुद्दीन औलिया के एक शिष्य ने अपनी बेटी की शादी करनी थी जो बहुत गरीब था। उस शिष्य के दिल में ख्याल आया कि पीर के पास जाकर कुछ ले आता हूँ। उसने निजामुद्दीन औलिया के पास आकर विनती की, ''मैंने अपनी बेटी की शादी करनी है आप मेरी कुछ मदद करें।'' निजामुद्दीन औलिया ने कहा, ''तू मेरे पास बैठ जा, जो चढ़ावा आएगा वह तू ले जाना।'' मालिक की मौज उस दिन कोई चढ़ावा नहीं आया। निजामुद्दीन औलिया ने कहा कि एक दिन और इंतजार कर उस दिन भी कोई चढ़ावा नहीं आया, तीसरे दिन फिर इंतजार की लेकिन कोई चढ़ावा नहीं आया।

जब वह सेवक निराश होने लगा तो निजामुद्दीन औलिया ने कहा, ''प्यारेया, मेरे पास इन जूतियों के सिवाय कुछ नहीं है तू इन जूतियों को ही ले जा।'' सेवक ने टूटे हुए दिल से जूतियां उठा ली। वह सेवक जूतियां लेकर चलने लगा तो आगे से अमीर खुसरों गुरु के दर्शनों के लिए आ रहा था। अमीर खुसरो को महक आने लगी। जैसे-जैसे वह आदमी नजदीक आ रहा था वैसे-वैसे महक बढ़ती जा रही थी। जब वह आदमी पास से निकल

गया तो महक पीछे की तरफ से आने लगी। अमीर खुसरों के दिल में ख्याल आया कि यह महक इस आदमी में से ही आ रही है, इस आदमी के पास ही कोई राज़ है।

अमीर खुसरों ने उस आदमी से पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो और तुमने कहाँ जाना है? उस आदमी ने जवाब दिया, ''मैंने अपनी लड़की की शादी करनी है, मैं निजामुद्दीन औलिया के पास गया था कि वह मेरी कुछ मदद करेंगे लेकिन फकीर तो खुद भूखे नंगे होते हैं। जब परमात्मा ही कुछ न दे तो फकीरों ने क्या देना है?'' अमीर खुसरों ने उससे पूछा कि उन्होंने तुम्हें कुछ दिया भी है? उस आदमी ने कहा, ''उन्होंने मुझे अपनी ये जूतियां दी हैं।'' अमीर खुसरों ने पूछा, ''तुमने इन जूतियों का क्या लेना है?'' गरीब आदमी ने कहा, ''तुम जो मर्जी दे दो।''

अमीर खुसरों ने कहा, ''मैं इन जूतियों का मूल्य तो नहीं दे सकता ये मेरे लिए अमूल्य हैं क्योंकि ये मेरे गुरु के पवित्र चरणों के साथ लगी हुई हैं लेकिन मेरी जो हैसियत है वह मैं तुझे दे देता हूँ।'' अमीर खुसरों ने अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए धन से भरा हुआ एक ऊँट रखकर बाकी सारी जिंदगी का कमाया हुआ धन उस आदमी को दे दिया। अमीर खुसरों ने अपने मुर्शिद की जूतियां उठाकर अपने सिर पर रख ली और मुर्शिद के पास जाकर कहा, ''आप ये जूतियां पहन लें।''

निजामुद्दीन औलिया ने अमीर खुसरो से पूछा, ''तुमने ये जूतियां कहाँ से ली?'' अमीर खुसरों ने रास्ते का सारा हाल सुना दिया। मुर्शिद ने पूछा कि तुमने इन जूतियों का क्या दिया? अमीर खुसरों ने कहा कि मैं इसकी कीमत तो नहीं चुका सकता लेकिन मेरे पास जो कुछ था वह मैंने उसे दे दिया। निजामुद्दीन औलिया ने अमीर खुसरों को प्यार से गले लगाकर कहा, ''फिर भी तुझे ये जूतियां सस्ती हैं।'' आखिर उसके इश्क और प्यार को देखकर निजामुद्दीन औलिया ने कहा कि जब आखिरी वक्त

आए तो अमीर खुसरो की कब्र मेरी कब्र के पास मत बनाना अगर ऐसा किया तो मेरी कब्र फट जाएगी। जब सेवक के दिल में गुरु का प्यार जाग जाता है तब सेवक दुनिया की कोई वस्तु माँगने के लिए तैयार नहीं होता। वह माँगता है तो गुरु से गुरु ही माँगता है, गुरु का प्यार ही माँगता है।

**प्रीत लगी तुम नाम की, पल बिसरै नाहीं।**
**नजर करो अब मिहर की, मोहिं मिलो गुसाईं।।**

कबीर साहब बहुत प्यार से कहते हैं, ''अब मेरी प्रीत तेरे नाम के साथ लग गई है। नाम के साथ प्रीत उस समय लगती है, नाम लेने का उत्साह उस समय पैदा होता है जब आदि कर्ता सचखंड में यह फैसला कर लेता है कि यह आत्मा बहुत भटक चुकी है। कई जन्मों से यह आत्मा पशु-पक्षियों के जामें में भटक रही है, जब इंसान का जामा मिला तब भी इसने चैन से नहीं काटा। इस जामें में भी आत्मा विषय-विकारों के जंगल में दुख-मुसीबतों में भटकती रही है। जब परमात्मा भटकती हुई आत्मा पर दया-मेहर करता है तब उसके दिल में नाम लेने की इच्छा पैदा करता है और आत्मा का मिलाप किसी ऐसे सन्त-महात्मा के साथ करवाता है जो नाम जपकर नाम रूप ही हो चुका होता हैं।''

परमात्मा सावन कहा करते थे, **''यह पहले से ही तय होता है कि इस आत्मा को पूरा गुरु मिलेगा या नहीं? इसे गुरु पर भरोसा आएगा या नहीं? यह नाम लेकर कमाई करेगा या अगले जन्म पर डालेगा? यह सब कुछ पहले से ही तय होता है।''**

कबीर साहब कहते हैं, ''मेरी नाम के साथ इस तरह प्रीत लग गई है कि अब मैं उठते-बैठते, सोते-जागते नाम को भूल नहीं सकता। कुदरती उसूल है कि जिससे हमारा प्यार है बिना याद किए हुए भी हमारे दिल में उसकी तस्वीर उभर आती है।'' मछली की पानी से प्रीत है। जब उसे

शिकारी पकड़ लेते हैं मछली को मसाले लगाकर भूना जाता है। मछली जिसके पेट में जाती है वहाँ भी पानी के साथ अपनी प्रीत नहीं छोड़ती। मछली खाने वाले को ज्यादा प्यास लगती है, पेट में जाकर भी मछली पानी के साथ अपना प्यार जाहिर कर देती है।

**नजर करो अब मिहर की, मोहिं मिलो गुसाईं।।**

तूने अपने आप ही प्यार लगाया, नाम के साथ जोड़ा। हम कलयुग के भूले जीव तेरे नाम को क्या समझ सकते थे?'' गुरु अर्जुनदेव कहते हैंः

*आपण लिए जे मिले, विछड़ क्यों रोवण।*

हे परमात्मा! अगर हमारे हाथ में होता तो हम तुझसे बिछुड़कर क्यों रोते फिरते? कबीर साहब कहते हैं, ''जैसे दया करके आपने नाम दिया है, नाम का उत्साह पैदा किया है, अब आप अपनी दया-मेहर की नजर भी करें ताकि हम नाम जप सकें; नाम में मिलकर नामरूप हो सकें।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

*नानक नदरी नदर निहाल।*

अगर परमात्मा रूप गुरु प्रेम भरी मेहर करता है तभी हम नाम की कमाई कर सकते हैं, सतसंग में जा सकते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी का एक कमाई वाला शिष्य भाई नंदलाल था, उसने अपने गुरु के सामने खड़े होकर यही अरदास कीः

*तेरी ईक नजर है मेरी जिंदगी का सवाल है।*

हजरत बाहु कहते हैः

*इक नजर जे आशिक वेखे, लख हजारां तारे हू।*
*लख निगाह जे आलिम वेखे, किसे ने कद्धी चाढ़े हू।।*

**बिरह सतावै मोहिं को, जिव तड़पै मेरा।।**
**तुम देखन की चाव है, प्रभु मिलो सवेरा।।**

सभी धर्म यह आशा बंधवाते हैं कि मरने के बाद आपको स्वर्ग मिलेंगे, मुक्ति मिलेगी लेकिन सन्त इसमें विश्वास नहीं करते। सन्त कहते हैं कि पता नहीं मरने के बाद मुक्ति मिलेगी या नहीं, हमारी क्या हालत होगी? अगर आप जीते जी अनपढ़ हैं तो मरने के बाद आलम-फाजल नहीं बन जाएंगे अगर आप जीते जी कामी, क्रोधी, लालची हैं और बुरे कर्म करते हैं तो मरने के बाद आप महात्मा नहीं बन सकते। हमने जीते जी महात्मा बनना है, जीते जी परमात्मा को प्राप्त करना है और जीते जी ही मुक्ति हासिल करनी है। भक्त नामदेव जी कहते हैंः

*मुए होए जे मुक्ति देवोगे, मुक्ति न होवे कोयला।*

कबीर साहब ऐसी पत्नी की मिसाल देते हैं जो अपने मायके में बैठकर पति के संदेश का इंतजार करती है। पति उसे संदेश भी भेजता है और साथ में डोली भी भेजता है। डोली को चार कुहार उठाते हैं, आज भी हिन्दुस्तान में यह रिवाज देखने को मिलता है। डोली उठाने वाले कुहार यमदूत हैं। यमदूत उस पत्नी आत्मा को पति के पास महलों में ले जाने की बजाय किसी और ही मुल्क में ले जाते हैं। वहाँ पत्नी आत्मा न अपने पति परमात्मा गुरुदेव को देखती है न अपने संगी-साथियों को देखती है और न ही वहाँ वे सामाजिक लोग दिखते हैं जिन्होंने यहाँ वायदे किए होते हैं। तब पत्नी आत्मा उन यमों के आगे प्रार्थनाएं करती है कि मेरी डोली को वापिस उसी मुल्क में ले चलो। वह वापिस संसार में आना चाहती है लेकिन वहाँ उसकी कौन सुनता है? वहाँ न कोई साथी-संगी है और न ही कोई जान पहचान वाला है।

महात्मा हमें मिसाल देकर भी समझाते हैं कि जैसे कोई पत्नी रात के समय जंगल में पति से बिछुड़कर रास्ता भूल जाती है। उसे कोई ऐसा आगु मिल जाता है जो उससे वायदा करता है कि मैं रास्ते का जानकार हूँ, मैं तुझे आराम से तेरे घर पहुँचा दूंगा लेकिन वह खुद ही विषय-विकारों के

जंगल में भूला फिरता है। भाई, पुरोहित, पादरी सब इसी श्रेणी में आ जाते हैं वे यह वायदा करते हैं कि हम सब रास्तों के वाकिफ हैं आपको आराम से आपके घर पहुँचा देंगे। जब वह पत्नी आत्मा देखती है कि जिसने मुझसे वायदा किया था वह खुद ही जंगल में भूला हुआ फिर रहा है, इसे रास्ते का पता नहीं इसलिए वह हैरान और परेशान होती है कि मैंने ऐसे आगु का पल्ला क्यों पकड़ा?

सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं कि हमें उसका पल्ला पकड़ना चाहिए जो खुद इन रास्तों से वाकिफ हो। सन्तों की ड्यूटी बाहर की बजाय अंदर ज्यादा बढ़ जाती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

*बिखड़े दाव नंघावे मेरा सतगुरु।*

काल ने ऐसी भूल-भुल्लैया बनाई हुई हैं जो वहाँ रोज नहीं जाता, वहाँ का वाकिफ नहीं है वह हमें वहाँ कैसे लेकर जा सकता है? आगे बहुत टेढ़े-मेढ़े रास्ते हैं, वहाँ कोई पढ़ा-लिखा या विद्वान लेकर नहीं जा सकता।

**तुम देखन की चाव है, प्रभु मिलो सवेरा।।**
**नैना तरसै दरस को, पल पलक न लागै।।**

अब आप कहते हैं, ''सिर्फ तेरे दर्शनों की तेरे प्यार और मिलाप की चाह है। पलक के साथ पलक नहीं लगती कि तू कब इन पलकों में आए और मैं तुझे इन पलकों में बंद कर लूं, न मैं खुद किसी को देखूं और न तुझे किसी को देखने दूं।'' कबीर साहब कहते हैंः

*जब आवें तूं आँख में आँख झांप मैं लूं।*
*न मैं देखूं और को न तुझे देखन दूं।।*

परमात्मा कृपाल सदा लैला-मजनूं की मिसाल देकर समझाया करते थे कि बेशक उनका मिजाजी इश्क था लेकिन लैला-मजनूं विषय-विकारों में लिपटे हुए नहीं थे। उनका आँखों का प्यार था। कोई ऊँट वाला लैला के

शहर जा रहा था। मजनूं उसके साथ बारह मील तक भागता हुआ लैला के लिए संदेश देता गया कि लैला से यह कहना, वह कहना लेकिन लैला की कहानी खत्म नहीं हुई।

इसी तरह लैला-मजनूं के इतिहास में आता है कि एक बार मजनूं एक कुत्ते को प्यार से चूम रहा था, किसी ने पूछा मियां मजनूं तू कुत्ते को क्यों चूम रहा है? मजनूं ने कहा कि यह कभी-कभी लैला की गली में चक्कर लगा आता है। इसी तरह एक दिन हवा लैला के घर की तरफ जा रही थी मजनूं हवा को ही संदेश देने लगा कि तू लैला को मेरे प्यार की कहानी सुनाना। लैला काली थी, मजनूं गोरा था। किसी ने मजनूं को ताना मारा कि लैला इतनी काली है और तू उसके साथ प्यार करता है। मजनूं ने कहा कि तुम्हें लैला की आधी शक्ल दिखाई देती है मुझे लैला की सारी शक्ल दिखाई देती है। तुम लैला को मजनूं की आँखों से देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि हुस्न सुंदर नहीं होता प्यार सुंदर होता है। वही हुस्न सुंदर लगने लग जाता है जहाँ आपका प्यार है।

मेरे गांव के एक खास रिश्तेदार ने मुझसे सवाल किया था, ''तू कृपाल के ऊपर इतना बिका हुआ है, आखिर वह इंसान ही है।'' मैंने प्यार से हँसकर उससे कहा, ''अगर तू उसे मेरी आँखों से देख ले तो तुझे पता लगे कि उसके रोम-रोम से करोड़ो सूरज फूट-फूटकर निकलते हैं। अगर तू उसे देख ले तो सूरज की तरफ आँख नहीं कर सकता। उसका तेज सूरज से भी ज्यादा है। सूरज के अंदर तपिश है लेकिन उसके अंदर तपिश नहीं। बेशक चन्द्रमा शान्त है लेकिन वह चन्द्रमा से भी ज्यादा शान्त है। चन्द्रमा में दाग है लेकिन परमात्मा कृपाल में कोई दाग नहीं।''

जब उसी आदमी ने महाराज कृपाल से नामदान प्राप्त किया तब मैंने उससे पूछा,''कैसा लगा?''उसने कहा क्या बताऊं उसकी आँख शेर की तरह है उसका प्रकाश मुझसे सहन नहीं हुआ अब मेरा कोई सवाल नहीं।

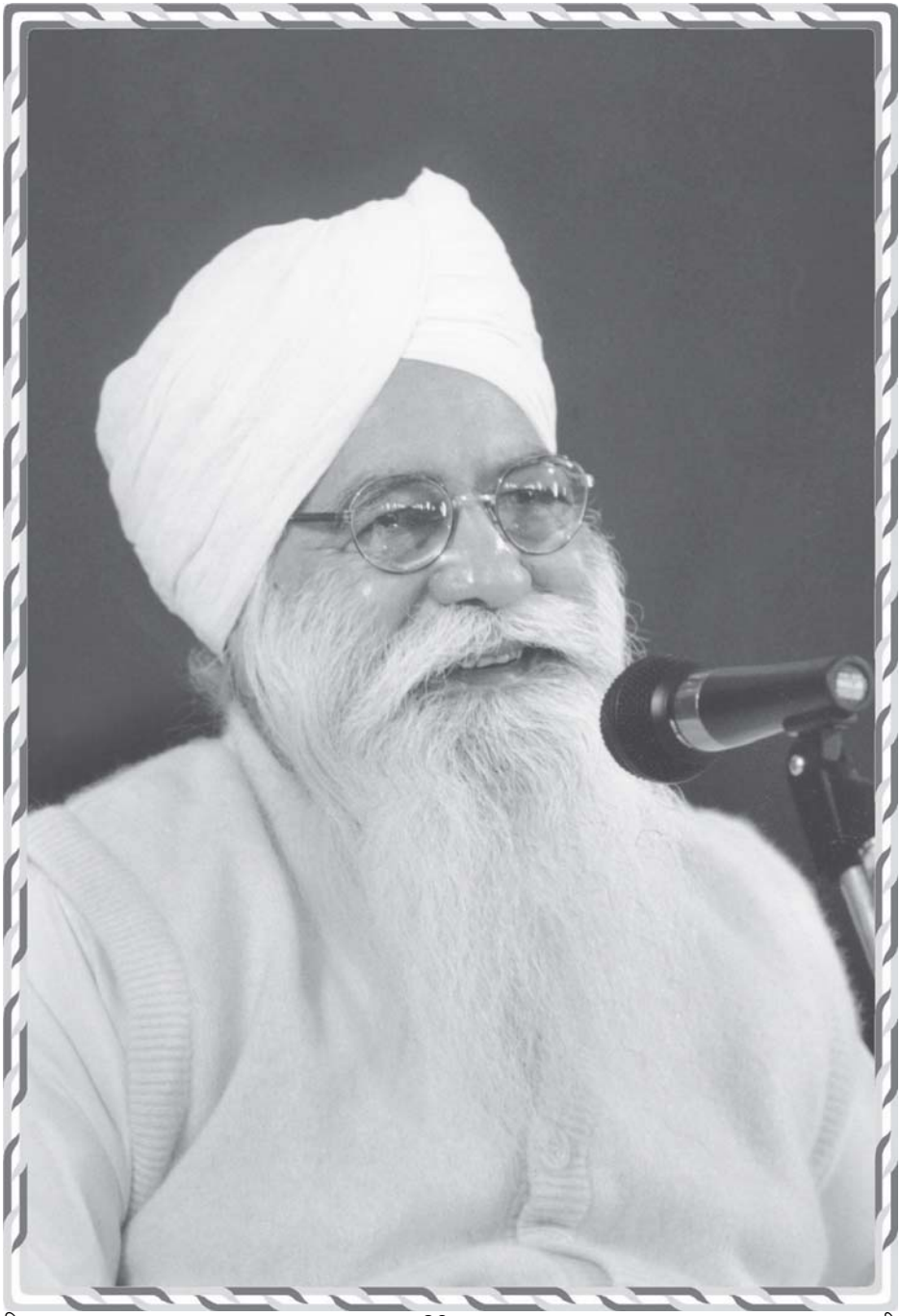

मेरा भाई जो हम सब भाई-बहनों में सबसे बड़ा था, जब उसके दिल में मेरे लिए हमदर्दी की लहर उठी तो उसने कहा कि तेरे ऊपर कृपाल ने जादू कर दिया है। तेरा दिमाग ठीक नहीं तू सारा दिन सोते-जागते उसे याद करता रहता है। चल! तुझे अमृतसर पागलखाने में दिखा लाते हैं ताकि तेरा पागलपन ठीक हो जाए। मैंने हँसकर कहा कि वाक्य ही उसने जादू किया है जो सिर पर चढ़कर बोलता है। यह मेरे बस में नहीं। प्यारेया! तू अपना दिमाग ठीक कर, मेरे दिमाग का फिक्र मत कर; तुझे इसी ने संभालना है।

कुछ साल पहले जब मेरे उसी भाई का आखिरी समय आया तब वह बाहर से आया और कहने लगा कि मुझे चार कसाईयों ने पकड़ लिया है। थोड़ी देर बाद कहने लगा कि मुझे परमात्मा कृपाल ने बचा लिया है। पहले मेरे परिवार में से कोई सतसंग में नहीं आता था नामदान नहीं लेता था। उसके बाद मेरे परिवार के लोगों ने नामदान भी लिया और अब हर सतसंग में आते हैं। पता तब लगता है जब गुरु की संभाल देखते हैं, गुरु का प्यार देखते हैं और गुरु की तालीम पर अमल करके हम अंदर जाकर अपनी आँखों से सच्चाई को खुद देख लेते हैं।

मैं जब कनाडा-केलगिरी में सतसंग करने के लिए गया वहाँ एक अमेरिकन बजुर्ग माता आई। उसने अपने पति की संभाल के बारे में बताया कि मैं और मेरा पति नामलेवा नहीं लेकिन मेरी दोनों लड़कियां नामलेवा हैं। हमारे घर में आपकी और गुरु कृपाल की हमेशा चर्चा होती रहती है। हम सुनकर बहुत खुश होते हैं, हमें बहुत भरोसा भी है। कुछ दिन पहले जब मेरे पति का आखिरी समय आया तब हमने आपके गुरुदेव की संभाल देखी, हमें कोई शक नहीं कि आपके गुरु ने मेरे पति की संभाल की हैं। मैं केलगिरी में सिर्फ आपका धन्यवाद करने के लिए आई हूँ। उसने वहाँ सात दिन सतसंग सुना। मेरे कहने का भाव इतना ही है कि हम बाहर से तो उसे इंसान समझते हैं लेकिन वह इंसानों से ऊपर होता है।

जब बुल्लेशाह से उसके भाई-बहनों ने पूछा कि तू सैयद होकर अराईयों के पास क्यों जाता है, ईनायत शाह में ऐसी क्या खूबी है? बुल्लेशाह ने कहा अगर कोई बाहर से ईनायत शाह को देखे तो उसके गले में कपड़े ही हैं और चमड़े का शरीर है अगर कोई अंदर जाकर देखे तो वह बहिश्त में भी नहीं थूकेगा। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

*गुरु को मानुख का रूप न जान।*

गुरु अर्जुनदेव जी ने कहाः

*हर जिओ नाम पड़यों रामदास।*

बुल्लेशाह भी कहते हैंः

*मौला आदमी बन आया, वाह वाह आया जग जगाया।*

यह गरीब आत्मा जो आपके सामने बैठी है, जब परमात्मा कृपाल की दया से इसकी समझ में आया तो यही कहाः

*रब बंदा बणके आया, आके जग जगाया।*

उसने इंसान का जामा तो हम सोती हुई रूहों को जगाने के लिए धारण किया होता है। वह दुनिया में रहता हुआ, दुनिया की मैलों में नहीं लिपटता; उसका स्वरूप और भी है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

*गुरु मोहे अपना रूप दिखाओ।*
*यह भी रूप पियारा मो को, इसी ही से उसको समझाओ।।*

हमारी अलिफ-बे देह से शुरू होती है अगर देह से प्यार न हो तो हम अंदर एक कदम भी नहीं चल सकते। सन्त देह धारण करके न आएं तो हमें अंदर का भेद कौन दे सकता है, कौन हमारी गलतियां बता सकता है, कौन हमारी सोई हुई आत्मा को जगा सकता है?

**दर्दवंद दीदार का, निसि बासर जागै।।**
**जो अब के प्रीतम मिलें, करूँ निमिष न न्यारा।।**

कबीर साहब कहते हैं, ''जिसे बिछोड़े का दर्द है क्या वह रात को आराम से सो सकता है? आँखें बंद नहीं होती आँखे किसी और को चाहती हैं अगर मेरी आत्मा का प्यारा मुझे अभी मिल जाए एक पल के लिए मुझे पर्दा खोलकर अंदर दर्शन दे दे तो मैं एक सैकिंड के लिए भी उसे अलग न करूं।''

*खोल तनी गल लाया सज्जन बिथ रही न मासा।*
*सज्जन सेती सज्जन मिलया जैसे खंड पतासा।।*

परमात्मा कृपाल कहा करते थे, ''जिनकी रातें बन गई उनका सब कुछ बन गया है।'' मैं सदा ही बताया करता हूँ कि बचपन से ही मेरी विरासत में पिछली रात का सोना नहीं लिखा।

**अब कबीर गुरु पाया, मिला प्रान पियारा।।**

कबीर साहब ने इस शब्द में प्यार से बताया है कि मेरी प्रीत तेरे नाम के साथ लग गई है। **हे सतगुरु! मुझे सदा अपने साथ रखें।** मैं दिन-रात आपको याद करता हूँ। मुझे दुनिया के किसी पदार्थ की जरूरत नहीं। आप मुझे प्राणों से प्यारे हैं आप मुझे मिल गए हैं, मेरी आत्मा को तृप्ति आ गई है।

जिस तरह कबीर साहब ने प्यार से गुरु महिमा, गुरु के प्यार की चर्चा की है हम भी अपने अंदर ऐसी तड़प पैदा करें, प्यार पैदा करें अपने जीवन को सफल बनाएं।

15 जून 1994

***

# धन्य अजायब

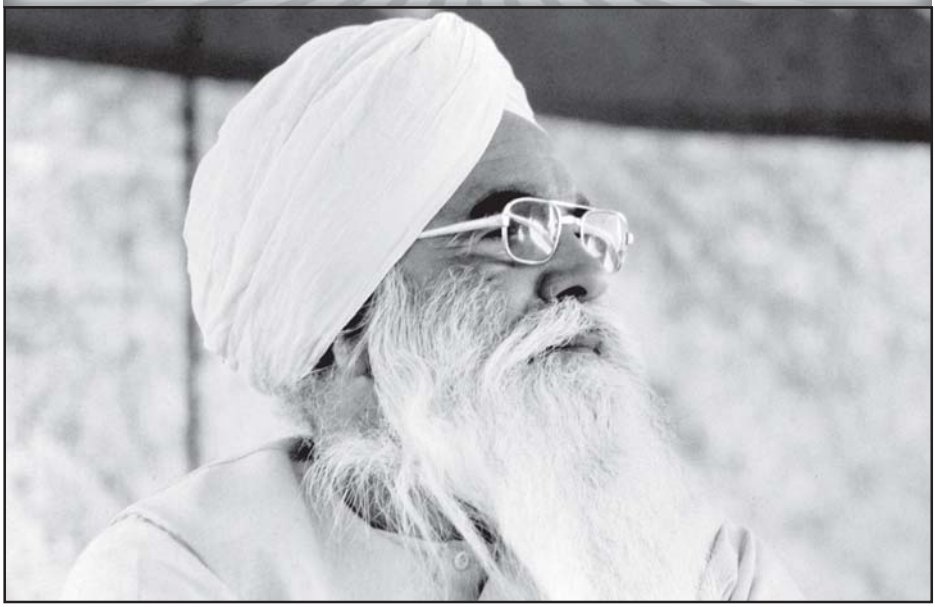

## 16 पी.एस. रायसिंह नगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 07 | से | 11 | सितम्बर | 2017 |
| 29, 30 सितम्बर व 01 अक्टूबर | | | | 2017 |
| 03 | से | 05 | नवम्बर | 2017 |
| 01 | से | 03 | दिसम्बर | 2017 |

*पत्रिका प्राप्त करने का स्थान:*

अजायब बानी

आर.एस.जी – 01, वी.आई. पी. कालोनी,

रिद्धि सिद्धि इन्कलेव Ist

श्री गंगानगर – 335 001 (राजस्थान)

99 50 55 66 71 व 80 79 08 46 01

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

3 जनवरी से 7 जनवरी 2018,

**भूरा भाई आरोग्य भवन,**

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा),

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067

98 33 00 40 00, व 022–24 96 50 00